कृष्णकथाश्रित चयनित महाकाव्यों का समीक्षात्मक अध्ययन
(श्रीकृष्णचरितामृतम्, श्रीकृष्णचरितम्, श्रीद्वारकाधीश तथा कृष्णोदयम्)

संस्कृत विषय में पी–एच.डी. उपाधि हेतु
शोध–प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

2017

शोध निर्देशिका
डॉ० अनीता
असि० प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
कला संकाय

शोधार्थिनी
राधा देवी

संकाय प्रमुख
प्रो० जे०के० वर्मा
कला संकाय

विभागाध्यक्षा
प्रो० अगम कुलश्रेष्ठ
संस्कृत विभाग,
कला संकाय

अध्ययन का क्षेत्र – संस्कृत साहित्य

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग,
आगरा–282005

साहित्य की विविध विधाओं में महाकाव्य सबसे अधिक महत्वपूर्ण काव्य रूप में है। महाकाव्य में सम्पूर्ण मानव–जीवन की प्रतिष्ठा होती है। जीवन की गहन एवं व्यापक अनुभूतियों को अपने विस्तृत रूप में समाहित कर मानवीय उच्चादर्शों की स्थापना महाकाव्य का उद्‌देश्य होता है। महाकाव्य शब्द महत् और काव्य से मिलकर बना है। इसमें जीवन का विस्तृत रूप समाहित रहता है।

''धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।

करोति कीति प्रीतिच्च साधुकाव्यं निषेवणम्''।।

साहित्यदर्पण– पृ.सं. 5

संस्कृत महाकाव्यों में भारतीय संस्कृति के चारों स्तम्भों **"धर्मार्थकाममोक्षम्"** के माध्यम से आदर्श जीवन की प्रतिष्ठा की गई है।

''सर्गबन्धों महाकाव्यं महतां च महच्च्यत्''

भामह–काव्यालंकार (1)1

महाकाव्य सर्गबद्ध होता है और इसका विषय गम्भीर होता है। इसके आरम्भ में मंगलाचरण होता है। इसका नायक महान और धीरोदात्तादि गुणों से युक्त होता है। महाकाव्य की कथावस्तु का आधार व्यापक होता है, जिसमें जीवन, जगत और प्रकृति के विविध अंगों का विस्तृत रूप से चित्रण किया जाता है। किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति का सच्चा प्रतिनिधित्व महाकाव्य के द्वारा व्यक्त किया जाता है। काव्य का क्षेत्र अत्यन्त विशाल है। इसी कारण काव्य को प्राचीनकाल से ही विविध भागों में विभाजित किया है। महाकाव्य मानव जीवन के स्वरूप को प्रतिबिम्बित करने वाला एक उत्कृष्ट प्रबन्ध काव्य माना जाता है।

समाज

''समं अंजति जनाः यस्मिन् सः समाजः''।

समाज शब्द की उत्पत्ति 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'अज्' धातु से 'घञ्' प्रत्यय के योग से हुई है; जिसका अर्थ है– मनुष्यों का समुदाय अर्थात् सब लोग जिसमें साथ मिलकर रहते है, वह समाज है। मनुष्य अपने स्वभाव व स्वाभाविक आवश्यकताओं के कारण सामाजिक प्राणी है। मनुष्य के बिना समाज का और समाज के बिना मनुष्य का अस्तित्व असम्भव सा प्रतीत होता है। प्रत्येक प्राणी समाज का अंग माना जाता है क्योंकि उसकी सम्पूर्ण क्रिया–कलाप सामाजिक मान्यता पर आधारित होते हैं।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष (चार पुरुषार्थ) की प्राप्ति समाज के अन्तर्गत होती है। सामाजिक क्रिया–कलापों में दोषों के निराकरण हेतु चेतना का समुचित प्रयोग अत्यावश्यक होता है।

समाज में समस्याओं का आवागमन होता रहता है। भारतीय विभिन्न सामाजिक व्यवस्था के मुख्य लक्षण वर्णाश्रम धर्म, जाति व्यवस्था, संयुक्त परिवार प्रणाली धार्मिक अनुष्ठान हैं। जिसे हमारे प्राचीन ऋषियों द्वारा बनाया गया था तथा जिसने भारत में स्थायी सामाजिक संगठन की स्थापना की।

धर्म

'धर्म' शब्द 'धृ' धातु एवं मन् प्रत्यय के योग से बना है। धर्म शब्द का अर्थ है– पालन करना या रक्षा करना। संसार में व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व सभी समाविष्ट है। इसलिए धर्म मनुष्य के विधि–विधानों एवं संस्कारों से अनुप्रेरित होता हैं। वस्तुतः धर्म एक सामूहिक जीवन प्रणाली का नाम है–

''ध्रियते लोकोऽनेन इति धर्मः''

अर्थात् लोक जिसे धारण करता है, वही धर्म है। उक्त मुख्यार्थ का प्रतिपादन करते हुए महर्षि वेद व्यास ने कहा है–

''धारणाद् धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः।।''

महाभारत शान्तिपर्व (11/108)

भाव यह है कि धर्म को धर्म इस कारण कहते है कि वह प्रजाओं को धारण करता है। धर्म इस कारण धर्म कहलाता है कि वह दुर्गति की ओर बढ़ते हुए जीवों को धारण कर (थाम) लेता है तथा उन्हें शुभ स्थिति में स्थापित कर देता है तथा तैत्तिरीयोपनिषद् में सत्य बोलना ही धर्म बताया है–

''सत्यं वद, धर्म चर''

तैत्तिरीयोपनिषद् (7/12)

धर्म के दस लक्षणों को मनुस्मृति में बताया है–

''धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।

धीविधा सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।''

मनुस्मृति– (6/92)

इस संसार में धर्म के तीन अंग है– (1) ज्ञान, (2) कर्म और (3) उपासना।

धर्म के विषय में श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है, कि जब–जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब–तब ईश्वर अपने रूप को रचते है– अर्थात् प्रत्यक्ष रूप में लोगों के सामने प्रकट होते है–

''यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।''

श्रीमद्भगवद्गीता– (4/7)

दर्शन

दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति 'दृश्' धातु से 'ल्यूट्' प्रत्यय करने पर होती है–

''दृश्यते अनेन इति दर्शनम्''

'दर्शन' शब्द का अर्थ चिन्तन करना, मनन करना है। मानव एक बुद्धिजीवी प्राणी है और बुद्धि दर्शन का विषय। इस सृष्टि में हो रहे प्राकृतिक परिवर्तन के कारण भूत परम सत्ता का दर्शन ही मानव–जीवन का एकमात्र अंतिम लक्ष्य है।

जिस प्रकार तिल में तैल और दुग्ध में घृत परिव्याप्त है, उसी प्रकार विश्व के प्रत्येक कण में आलौकिक परमसत्ता व्याप्त है और इस दर्शन का एकमात्र सहज सुगम मार्ग भगवद् प्राप्ति ही है।

सामान्य रूप से भारतीय दर्शन दो भागों – आस्तिक और नास्तिक में विभाजित किया गया है। जो दर्शन वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों का प्रमाण मानते है उन्हें आस्तिक दर्शन कहा जाता है– आस्तिक दर्शन के छः भेद हैं – न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त। नास्तिक दर्शन तीन हैं– चार्वाक, बौद्ध और जैन दर्शन।

यथा– 'श्रीकृष्णचरितामृतम्' का एक उदाहरण दृष्टव्य है जिसमें श्रीकृष्ण का चरित वर्णित हैं–

''विच्छेत्तुमद्धा दृटमायसं यथा लौहं सुतीक्ष्णं भवतीह साधनम्।

तथैव तत्कृष्णपदाब्जलब्धये तत्स्थश्च तद्धच्छिव एव साधनम्।।''

श्रीकृष्णचरितामृतम् (1/46)

कृष्णकथाश्रित महाकाव्य द्वारकाधीश में सुदामाचरित वर्णित है–

"मित्रं यस्य सुदाम – 'नाम विवुधो लोकेश–तुल्योऽभवत्

येनाऽवन्तिपुरी विलक्षण गुणैबल्यिेऽपि संपूजिता।

पुत्र चानयतागुरोऽपि मुदा–कीर्तिश्च यस्याद्भुता

एवं ब्राह्मणमानकृत स जयतु श्रीद्वारकाधीश्वरः।"

द्वारकाधीश (8 / 35)

इस प्रकार अध्येय महाकाव्यों में समाज, धर्म और दर्शन को लक्ष्य करके विविध दृष्टिकोण एवं मत प्राप्त होते है जिनका विस्तृत वर्णन शोधप्रबन्ध में यथास्थान किया जायेगा।

दयालबाग शिक्षण संस्थान के संस्कृत विभाग, कला संकाय की प्राध्यापिका डॉ. (श्रीमती) अनीता जी के परामर्श एवं कुशल निर्देशन से मुझे प्रबल बौद्धिक बल का सम्बल दिया है। शोधार्थिनी द्वारा अपने शोध कार्य हेतु कृष्णकथाश्रित चयनित महाकाव्यों को लेकर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, दार्शनिक तथा धार्मिक दृष्टि से अध्ययन किया जायेगा। अतः विषय का चयन मैंने साहित्यक सर्वेक्षण के लिए विविध विश्वविद्यालयों के ग्रन्थालयों, शोध प्रबन्धों तथा इन्टरनेट इत्यादि का गहन अन्वेषण किया।

किन्तु अध्येय महाकाव्यों पर उस दृष्टि से जिसे मैंने चयनित किया अभी तक मेरी दृष्टि से शोधकार्य नहीं हुआ है। इसलिए मैंने इसे अपने शोध का विषय चयनित किया है

कृष्णकथा मुझे प्रेमाभक्ति के लिए उत्प्रेरित करती है। इसी लालसायुक्त जिज्ञासा ने मुझे कृष्णकथाश्रित महाकाव्यों पर शोध कार्य के लिए प्रेरित किया है।

शोध को लिखते समय वर्णानात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा।

1. डॉ0 विजय कुमार के निर्देशन में कृष्णवलदेव का कथा साहित्य एक अध्ययन पर कार्य किया।

   (कोचिन विश्वविद्यालय ऑफ टेक्नोलॉजी – सन् 1992)

2. डॉ0 सुदर्शन मिश्र के निर्देशन में कृष्णकथाश्रित महाकाव्यों में "रूक्मिणीहरणम् एक आलोचनात्मक अध्ययन पर कार्य किया। (वीर बहादूर सिंह पूर्वाचंल विश्वविद्यालय, जौनपुर – सन् 2002)

3. डॉ0 सलमा मेफूज के निर्देशन में कृष्णप्रसाद शर्मा घिमिरे द्वारा कृष्णचरितामृतं महाकाव्य एक आलोचनात्मक अध्ययन (अलीगढ़ मुसलिम युनिवर्सटी – सन् 2004)

4. डॉ0 युधिष्ठिर तिवारी के निर्देशन में कृष्णकथाश्रित चम्पू महाकाव्यों की परम्परा में अभिनव कालिदास प्रणीत भागवत चम्पू एक अध्ययन पर कार्य किया।

(वीर बहादूर सिंह पूर्वाचंल विश्वविद्यालय, जौनपुर – सन् 2005)

5. डॉ0 राजकुमार जैन के निर्देशन में शारदा गोयल द्वारा आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों का समीक्षात्मक अध्ययन पर कार्य किया। (डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा)

कृष्णकथाश्रित चयनित महाकाव्यों का समीक्षात्मक अध्ययन

(श्री कृष्णचरितामृतम्, श्री कृष्णचरितम्, श्रीद्वारकाधीश तथा कृष्णोदयम्)

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

प्रथम अध्याय – आधुनिक संस्कृत महाकाव्य : स्वरूप एवं परम्परा

1-1 शोध विषय तथा शोध दृष्टि

1-2 सम्बन्धित विषय पर अनुसंधानों का अवलोकन

1-3 आधुनिक संस्कृत महाकाव्य : लक्षण एवं स्वरूप

1-4 कृष्णकथाश्रित संस्कृत महाकाव्यों की परम्परा

द्वितीय अध्याय – अध्येय महाकाव्यों का विशिष्ट परिचय एवं वस्तु–योजना

2-1 महाकाव्यकार		महाकाव्य		प्रकाशन वर्ष
• कृष्ण प्रसाद शर्मा घिमिरे	–	श्रीकृष्णचरितामृतम् महाकाव्य	–	1971
• रामाशीष पाण्डेय	–	कृष्णोदयम् महाकाव्य	–	1976
• रमेश चन्द्र शुक्लः	–	श्रीकृष्णचरितम् महाकाव्य	–	1979
• सहदेवकृष्ण चतुर्वेदी	–	श्रीद्वारकाधीश महाकाव्य	–	1980

2-2 अध्येय महाकाव्यों में वस्तु–योजना एवं पात्रों का चरित्र–चित्रण

तृतीय अध्याय – अध्येय महाकाव्यों में वर्णित समकालीन समाज

3-1 अध्येय महाकाव्यों वर्णव्यवस्था एवं जाति व्यवस्था

3-2 शिक्षा एवं नारी की स्थिति

3-3 राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति

3-4 अध्येय महाकाव्यों में वर्णित जीवन–मूल्य

3-5 तत्कालीन समाज में आचार–विचार

चतुर्थ अध्याय – अध्येय महाकाव्यों में वर्णित धर्म का स्वरूप

4-1 धर्म का स्वरूप एवं अवधारणा

4-2 अध्येय महाकाव्यों में वैष्णव धर्म के सिद्धान्त

4-3 अध्येय महाकाव्यों में भक्ति का स्वरूप

4-4 अध्येय महाकाव्यों में वर्णित सगुणोपसना

पंचम अध्याय – अध्येय महाकाव्यों में दार्शनिक चेतना

5-1 अध्येय महाकाव्यों में प्रतिपादित दर्शन का स्वरूप

षष्ठ अध्याय – भाव पक्ष की दृष्टि से अध्येय महाकाव्यों का अनुशीलन

6-1 भावाभिव्यज्जना एवं रस – निरूपण

6-2 भाषा सौष्ठव एवं रचना – शैली

6-3 अलंकार विधान एवं छन्द– योजना

उपसंहार – अध्ययन का निष्कर्ष

संदर्भ–ग्रन्थ सूची

अध्येय ग्रन्थ

क्र.सं.	महाकाव्यकार	महाकाव्य	प्रकाशन एवं वर्ष
1.	कृष्ण प्रसाद शर्मा घिमिरे	श्रीकृष्णचरितामृतम्	श्रीग्रन्थमाला प्रकाशन काण्ठमाण्डू, नेपाल 1971
2.	डॉ. रामाशीष पाण्डेय	कृष्णोदयम्	हरमू हाउसिंग कॉलोनी राँची, बिहार 1976
3.	डॉ. रमेश चन्द्र शुक्लः	श्रीकृष्णचरितम्	देववाणी परिषद, दिल्ली 1979
4.	डॉ. वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी	श्रीद्वारकाधीश	श्री कृष्ण सत्संग भवन प्रकाशन गताश्रम टीला, मथुरा 1980

सहायक ग्रन्थ

क्र.सं.	लेखक	पुस्तक	प्रकाशन
1.	श्री विश्वनाथ कविराज	साहित्यदर्पण	मोती लाल बनारसीदास, दिल्ली 1970
2.	एस.के. चौधरी	समाजशास्त्रीय परिवर्तन	उपकार प्रकाशन, दिल्ली, 2003
3.	गंगा सागर राय	काव्यमीमांसा	चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी 2005
4.	मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः	अभिराजशोभूषणम्	वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद 2006
5.	श्री हर्षविरचितम्	नैषधीयचरितम्	चौखम्बा सुरभारती वाराणसी 2007
6.	श्री केशव मुसलगाँवकर	आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा	चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी 2010
7.	अभिराज राजेन्द्र मिश्र	संस्कृत का अर्वाचीन समीक्षात्मक काव्यशास्त्र	विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 2010
8.	डॉ. ए.वी.कीथ	संस्कृत साहित्य का इतिहास	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी 2011
9.	राजमङ्गल यादव	संस्कृत काव्य शास्त्र की अर्वाचीन परम्परा	प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली 2011
10.	श्री मम्मट विरचितम्	काव्यप्रकाश	रतिराम शास्त्री सुभाष बाजार, मेरठ 2012
11.	महाकवि माघ प्रणीतम्	शिशुपालवधम्	भारतीय संस्कृति वाराणसी 2013
12.	कविकालिदास विरचितम्	रघुवंशम्	चौखम्बा सुरभारती वाराणसी 2014
13.	वामन शिवराम आप्टे	संस्कृत हिन्दी कोश	कमल प्रकाशन नई दिल्ली 2014
14.	डॉ. एच.एन. यादव	तैत्तिरीयोपनिषद्	विश्वविद्यालय प्रकाशन, आगरा